

द्विवादीय

बालेन शाह-कूटनीतिक सम्मान की सनक



डॉ. ब्रह्मदीप अलुने
(अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ)

कूटनीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रीय हितों के संवर्धन का बेहतरीन माध्यम है जो किसी नियमों, परंपराओं और औपचारिकताओं का मोहताज नहीं हो सकता। नेपाल के नए नवेले प्रधानमंत्री बालेन शाह ने कूटनीति को औपचारिकताओं के बाहुल्य में जकड़कर देश के दीर्घकालिक भविष्य को संकट में डाल दिया है। दरअसल बालेन शाह अन्य देशों के राष्ट्रपति और राजनयिकों से बातचीत, वार्ताओं और संबंधों के प्रबंधन की कला के महत्व को नजरअंदाज करके खुद के देश में एक मजबूत नेता की छवि गढ़ना चाहते हैं। उनकी यही सनक भारत और अमेरिका जैसे सहयोगियों को नाराज कर सकती है। बालेन शाह का एक वर्ष तक किसी भी विदेशी दौरे पर न जाने का निर्णय, भारत के निमंत्रण के बावजूद विदेश यात्रा से दूरी तथा अमेरिकी विशेष दूत सर्जियो गोर से मुलाकात से इनकार ने यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि यह नेपाल की नई कूटनीतिक आत्मनिर्भरता का संकेत है या फिर कहीं यह कूटनीतिक सम्मान की सनक का एक नया रूप तो नहीं है।

नेपाल में लंबे समय से यह परंपरा रही है कि नया प्रधानमंत्री शपथ लेने के बाद सबसे पहले भारत का दौरा करता है। इसके पीछे केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक वास्तविकताएं भी रही हैं। भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार, पारगमन मार्ग और सुरक्षा सहयोगी है। लेकिन बालेन शाह ने भारत की यात्रा को फिलहाल स्थगित करके यह संकेत देने की कोशिश की है कि नेपाल अब अपनी विदेश नीति को केवल पारंपरिक कूटनीतिक रस्मों के आधार पर नहीं चलाना चाहता। उनका मानना है कि विदेश यात्राएँ केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि ठोस समझौतों और

राष्ट्रीय हितों पर आधारित होनी चाहिए। यह निर्णय आत्मसम्मान और स्वतंत्र विदेश नीति का प्रतीक लगाता है, लेकिन इसके भीतर एक दूसरा पक्ष भी दिखाई देता है। वे भारत से रिश्तों को मजबूत करने के स्थान पर ओली की भारत विरोध की राजनीति पर चलकर सीमा विवाद को तूल दे रहे हैं, जो उनकी राजनीतिक अदूरदर्शिता को दिखाता है। ओली ने राष्ट्रवाद की राजनीति को मजबूत करने के लिए कई बार भारत-विरोधी रूख अपनाया। 2015 की सीमा नाकेबंदी के बाद उन्होंने भारत पर नेपाल को दबाव में लेने का आरोप लगाया, जिससे नेपाल में उनकी लोकप्रियता बढ़ी, लेकिन द्विपक्षीय संबंधों में तनाव भी बढ़ गया। बाद में कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा विवाद को अत्यधिक राजनीतिक रूप से प्रस्तुत करने से दोनों देशों के संबंध और जटिल हुए। नेपाल की राजनीति में भारत से दूरी दिखाना कई बार घरेलू लोकप्रियता हासिल करने का माध्यम भी रहा है। यदि बालेन शाह भारत से दूरी बनाकर केवल राष्ट्रवादी छवि को मजबूत करने की राजनीति करते हैं, तो इससे नेपाल की रणनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ बढ़ सकती हैं। वहीं यदि वे संतुलित और व्यवहारिक कूटनीति अपनाते हैं, तो वे नेपाल को अधिक स्वतंत्र और स्थिर दिशा भी दे सकते हैं। नेपाल की अधिकांश व्यापारिक आपूर्ति, ऊर्जा, परिवहन और बाहरी संपर्क भारत के माध्यम से संचालित होते हैं। लाखों नेपाली नागरिक भारत में काम करते हैं और दोनों देशों के बीच खुली सीमा सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण आधार है। ऐसे में यदि नेपाल की राजनीति केवल भारत-विरोधी भावनाओं पर आधारित होने लगे, तो इसका सबसे बड़ा नुकसान स्वयं नेपाल को ही उठाना पड़ सकता है। नेपाल की दीर्घकालिक स्थिरता और विकास केवल प्रतीकात्मक राष्ट्रवाद या भारत से दूरी बनाकर संभव नहीं है। नेपाल की भौगोलिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वास्तविकता ऐसी है कि भारत के साथ मजबूत और व्यवहारिक संबंध उसके राष्ट्रीय हितों के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।



नेपाल की आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक संरचना भारत से इतनी गहराई से जुड़ी हुई है कि भारत को नजरअंदाज करके नेपाल दीर्घकालिक स्थिरता और विकास की कल्पना नहीं कर सकता। इन सबके बीच प्रधानमंत्री बालेन शाह को यह भी समझना होगा कि कूटनीति में सम्मान महत्वपूर्ण होता है, परंतु अत्यधिक प्रतीकात्मकता कभी-कभी व्यवहारिक राजनीति को कमजोर कर देती है। अंतरराष्ट्रीय संबंध केवल प्रोटोकॉल से नहीं चलते, वे संवाद, संपर्क और लचीलेपन पर भी आधारित होते हैं। यदि कोई नेतृत्व यह तय कर ले कि वह केवल राष्ट्रप्रेमियों या विदेश मंत्रियों के स्तर के लोगों से ही मिलेगा, तो यह व्यवहारिक कूटनीति की जगह प्रतिष्ठा-आधारित राजनीति को बढ़ावा दे सकता है। यही स्थिति अमेरिकी विशेष दूत सर्जियो गोर के मामले में देखने को मिली। अमेरिकी पक्ष ने काटमांडू यात्रा के दौरान बालेन शाह से मुलाकात का अनुरोध किया, लेकिन प्रधानमंत्री कार्यालय ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि

प्रधानमंत्री घरेलू विकास और सुशासन के कार्यों में व्यस्त है। यह माना जा रहा है कि बालेन शाह ने यह कड़ा प्रोटोकॉल बनाया है कि वे केवल समकक्ष या उससे उच्च स्तर के नेताओं से ही मिलेंगे। यह निर्णय नेपाल की गरिमात्मक कूटनीतिक रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन वास्तव में इसमें कूटनीतिक अकुशलता भी दिखाई दी। अमेरिकी दूत सर्जियो गोर कोई साधारण राजनयिक नहीं है। वे राष्ट्रपति ट्रम्प के अत्यंत करीबी सहयोगियों में माने जाते हैं तथा उनका प्रभाव अमेरिकी सत्ता संरचना के भीतर गहरा माना जाता है। दक्षिण और मध्य एशिया के लिए विशेष दूत के रूप में उनकी भूमिका केवल औपचारिक नहीं, बल्कि रणनीतिक है। वे भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश और मध्य एशिया से जुड़ी अमेरिकी नीति के महत्वपूर्ण चेहरों में गिने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति से मुलाकात को केवल प्रोटोकॉल के आधार पर टालना कई कूटनीतिक हलकों में अपरिपक्वता के रूप में देखा जाना चाहिए। यह संवादहीनता नेपाल के राष्ट्रीय हितों के लिए नुकसानदायक हो सकती है। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल अक्सर विभिन्न देशों के शीर्ष अधिकारियों से मिलते हैं, जिसमें पुतिन जैसे शीर्ष राजनीतिज्ञ भी शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी परिस्थिति और रणनीतिक जरूरत के अनुसार अलग अलग स्तर के राजनयिकों से संवाद करते हैं। आधुनिक कूटनीति में लचीलापन शक्ति का प्रतीक माना जाता है, कमजोरी का नहीं। नेपाल की स्थिति और भी संवेदनशील है, यह भारत और चीन के बीच स्थित एक छोटा लेकिन रणनीतिक राष्ट्र है। अमेरिका लंबे समय से नेपाल में विकास, लोकतंत्र और अवसरवादी परियोजनाओं के माध्यम से अपनी उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश करता रहा है। अभी नेपाल के आर्थिक हालात बेहतर नहीं हैं, बालेन शाह, सर्जियो गोर से मिलकर कई अहम समझौतों की ओर कदम बढ़ा सकते थे, लेकिन नेपाली प्रधानमंत्री ने यह अवसर गंवा दिया।

शक की लोकप्रियता मुख्यतः उनकी परंपरागत सत्ता बालेन शाह को नेपाल की जनता ने पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्था से अलग एक विकल्प के रूप में उभरते हुए देखा। उन्हें सत्ता इसलिए सौंपी गई कि वे देश के प्रशासनिक ढांचे को बेहतर करे, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था को कम करें तथा नेपाल को अधिक मजबूत, आत्मनिर्भर और व्यवस्थित राष्ट्र बनाने की दिशा में कार्य करें। भू-राजनीतिक रूप से नेपाल एक संवेदनशील देश है और उसके लिए कूटनीति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारत, चीन और अमेरिका जैसी बड़ी शक्तियों के बीच स्थित नेपाल को अत्यधिक संतुलित और व्यवहारिक कूटनीति की आवश्यकता होती है। किसी प्रभावशाली प्रतिनिधि या रणनीतिक शक्ति से दूरी बनाना कई बार अनावश्यक तनाव पैदा कर सकता है। नेपाल की अर्थव्यवस्था, व्यापार और विकास बाहरी सहयोग से जुड़ा हुआ है, यहां कूटनीतिक कठोरता जोखिम पैदा कर सकती है। बालेन शाह के पास नेपाल की राजनीति को नई दिशा देने का अवसर है। यदि वे घरेलू सुधारों के साथ-साथ व्यवहारिक और परिपक्व कूटनीति अपनाते हैं, तो वे नेपाल को क्षेत्रीय राजनीति में अधिक सम्मानजनक और स्थिर स्थिति दिला सकते हैं। लेकिन यदि विदेश नीति केवल व्यक्तिगत छवि निर्माण तक सीमित रह गई, तो इससे नेपाल की आर्थिक और रणनीतिक चुनौतियाँ बढ़ सकती हैं।

ढाँचे को विरोधी छवि और स्थानीय प्रशासनिक सुधारों से बनी है। वे पारंपरिक राजनीतिक वर्ग से अलग दिखना चाहते हैं। संभवतः यही कारण है कि वे विदेश नीति में भी एक नई शैली प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय राजनीति घरेलू राजनीति से अलग होती है। यहां केवल लोकप्रियता नहीं, बल्कि निरंतर संवाद, रणनीतिक धैर्य और व्यवहारिकता ही जरूरी होती है।

व्यंग्य

हाय हाय मिर्ची उफ ... उफ मिर्ची ...



अप्रैल माह से मिर्ची की झाल देश भर में सिर चढ़ कर बोल रही है। इसकी झाल आज तक पश्चिम बंगाल में विपक्ष की जुबान पर झाल की, सी... सी... सी आज भी बरकरार है। मोदी जी भी झर झर गजब ही हैं। चुनाव प्रचार के दौरान वे भी झारग्राम पहुंच गए। उन्होंने वहां दस रूपए में वंग जनता को फिलहाल ठगना रहे हों। उन्हीं ने वहां बता दिया कि दस रूपए में वो किया जा सकता है जो 15 साल को चुन मुन कांग्रेस सरकार को चलता कर दे। कुछ तो स्पेशल है इस बंदे में। तभी तो मोदी ने राष्ट्र गीत वन्देमातरम को भी झारग्राम जन गण मन जैसा कानूनी दर्जा दे डाला। मोदी जी ने झारग्राम में दस रूपए में बंगाल की प्रसिद्ध झालमुड़ी खरीद कर खुद तो खाई ही खाई साथ ही वहां आसपास खड़ी महिलाओं और बच्चों को भी उसी दस रूपए से लंगर भी चखा डाला। ये गुजरती भी गजब होते हैं। कम पैसों में वो कैसा रंग जमा देते हैं यह मोदी जी ने झारग्राम में दिखा दिया। कहा ये जाता है कि गुजरती इतने प्रोफेशनल होते हैं कि रेत में से भी तेल निकालने का कोशल और होसला रखते हैं।

झारग्राम में मोदी ने जो भी झारमुड़ी खरीद कर फका क्या मारा, लोगों के मुंह अपने आप ऐसे खुल गए जैसे वो खुद फका लगा रहे हों। भैया सच्ची बात तो यह है कि इसके पहले तो हमने झारमुड़ी का नाम तक नहीं सुना था। हां, यदि इससे मिलता जुलता कोई नाम सुना था तो वह था मालगुड़ी। अरे! प्यारी मालगुड़ी जो टीवी के ब्लैक साइट के जमाने में दूरदर्शन पर आने वाला सीरियल था मालगुड़ी डेज नहीं याद आया?

अरे वह भोला भाला धोती कमीज और काली टोपी लगाए, शरारती सा लड़का, अपना स्वामी सीरियल का वह मधुर संगीत ताना न न ना. ताना न न ना. अब याद आया ना. यह सीरियल और इसका संगीत खूब मशहूर हो गया था। तो भाइयों हमने मालगुड़ी का नाम ही सुन रखा था। मोदी जी ने पहेली बार दस रूपए अपने जेब से निकाल कर झालमुड़ी को अमर कर डाला। मोदी जी का अपना जेब से दस रूपए का नोट निकाल कर गजब ही कर डाला। वाह! क्या जादू है. नेताओं के बारे में यह मशहूर है कि वह अपनी जेब में न तो पैसे रखते हैं और न ही अपनी जेब से पैसे निकालते हैं. वो तो जनता की जेब से पैसा निकालने के लिए मशहूर होते हैं। पर मोदी जी ने एक दम नया कड़क कर का नोट निकाल कर भीचक कर दिया. हमारे पास तो मैले कुचैले ऐसे नोट आते हैं कि लगता है शर्ट की पॉकेट ही गंदी न हो जाए. पीएम के पास नया नोट और हमारे पास मैला कुचैला. यह तो रंग भेद है. देख रहे हो जज साहब. जनता के साथ कितनी ज्यादाती हो रही है? बरहाल मोदी जी ने एक ही झटके में झारग्राम की झालमुड़ी को पंजा से अर्श तक पहुंचा दिया। आप का सवाल होगा कि झालमुड़ी में खास क्या है? तो भाइयों झालमुड़ी में यदि कुछ खास है तो वह है झाल. इसमें झाल ही खास है. इसमें कोई झाल नहीं है कि झालमुड़ी में झाल ही खास है. पहलियां न बुझाते हुए आइए अब बता ही देते हैं कि झाल का मतलब क्या है. झाल का मतलब है तीखापन, चटपटा पन. खड़ी बोली में बोलें तो मिर्ची. मोदी जी ने मिर्ची वाली झालमुड़ी का जो चटखारा मारा तो मिर्ची की झाल दीदी की भवानीपुर तक जा पहुंची. उनके मुंह से सी... सी की आवाज निकलने लगी. भारत के विभिन्न भागों में झालमुड़ी जैसी जो डिश मिलती है उसको भेत भी कहा जाता है. इसमें मुरमुर, मिर्च, सरसों का तेल, प्याज, हरा धनिया, नींबू, कच्ची केरी के स्लाइस शामिल होता है. इसकी तुलना विभिन्न पाठियों द्वारा तैयार किए जाने वाले गटबंधनों यानी एलायंस से की जा सकती है. इसे भानुमति का कुनबा भी कहा जा सकता है. कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा।

अरे वही मिर्ची जो गोविंदा के रस्ते पर जाते समय - भेलपूरी खाते समय लोगों को लगी थी. तभी तो गोविंदा ने कहा तुम को मिर्ची लगी तो मैं क्या करू. मिर्ची की ख्याति इतनी और ऐसी है कि व्याकरण शास्त्री भी उसे कहावत में शामिल करने को मजबूर हो गए. उनको भी मिर्ची अच्छी लगी. मिर्ची लगना देश में आम बोलचाल की भाषा बन गई. टाइम्स ग्रुप ने रेडियो मिर्ची नाम का एंटरटेन रेडियो चैनल ही खोल डाला. मिर्ची से अब हम वापस झालमुड़ी पर लौटते हैं. तो भाइयों गहरे शोध और अनुसंधान से यह पता किया गया कि आखिर मोदी जी को झालमुड़ी क्यों पसंद आई. उन्होंने इसे खाने का क्यों डिजाइन किया? तो इसका कारण था इसमें उलने वाले आधा दर्जन से ज्यादा इंग्रीडिएंट. मोदी जी को शादद झालमुड़ी में जो विभिन्न तरह की डाली जाने वाली सामग्रियां का मेल सिखाई दलों के एलायंस या गटबंधन जैसा लगा हो उन्होंने सोचा हो चलो पहले इसे निबटा देते हैं. जब 4 मई को रिजल्ट आए तो सब नक्शा ही बदल गया. सब झालमुड़ी खा रहे थे. एक बात और गूगल पर झालमुड़ी शब्द पिछले 22 सालों में सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाला शब्द बन गया.

बंगाल जीत के बाद भाजपा की अगली राजनीति



श्याम यादव
राजनीतिक लेखक

भारतीय जनता पार्टी के खाले में पश्चिम बंगाल की जीत आने के बाद देश की राजनीति का माहौल तेजी से बदलता दिखाई दे रहा है। यह सिर्फ एक राज्य का चुनाव परिणाम नहीं है। इसके राजनीतिक संदेश दूर तक जायेंगे। अब साफ दिखने लगा है कि भाजपा केवल अपनी पुरानी जमीन बचाने की राजनीति नहीं कर रही, बल्कि लगातार नया भूगोल जोड़ने में लगी है। दूसरी तरफ विपक्ष अभी भी अपनी बची हुई जमीन बचाने की लड़ाई लड़ रहा है। पश्चिम बंगाल लंबे समय तक ऐसा राज्य रहा जहां भाजपा को बाहरी पार्टी माना जाता था। पहले वामपंथ और बाद में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने वहाँ राजनीति को अपने तरीके से चलाया। भाजपा कई चुनाव लड़ती रही, लेकिन सत्ता तक पहुँच नहीं पाई। इसलिए बंगाल की इस जीत को भाजपा साधारण घटना की तरह नहीं देख रही। पार्टी इसे अपनी वैचारिक और राजनीतिक दोनों तरह की बड़ी उपलब्धि बताकर पेश कर रही है।

अब देश के लगभग बाइस राज्यों में भाजपा या एनडीए की सरकारें हैं। कई राज्यों में क्षेत्रीय दल जरूर अपने-अपने प्रभाव के सहारे टिके हुए हैं, लेकिन राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की बढ़ती ताकत साफ दिखाई दे रही है। यही वजह है कि आने वाले विधानसभा चुनावों को अब सिर्फ राज्य स्तर की लड़ाई नहीं माना जा रहा। अपने वाले वर्षों में जिन राज्यों में चुनाव होने हैं, उनमें उत्तर प्रदेश सबसे अहम होगा। दिल्ली की सत्ता का रास्ता आज भी लखनऊ से होकर गुजरता है। विपक्ष चाहे जितनी बैठकें कर ले, लेकिन फिलहाल ऐसा माहौल नहीं दिखता कि भाजपा को सीधे चुनौती मिल रही हो। बिहार और बंगाल के चुनावों के बाद विपक्षी गटबंधन को लेकर जो उत्साह दिखा था, वह अब ठंडा पड़ चुका है। भाजपा की ताकत सिर्फ उसका प्रचार नहीं है। उसकी असली ताकत

यह है कि पार्टी और उससे जुड़े संगठन लगातार मैदान में सक्रिय रहते हैं। चुनाव खत्म होने के बाद भी भाजपा अगले चुनाव की तैयारी में लग जाती है। बूथ स्तर तक सक्रिय कार्यकर्ता, योजनाओं का सीधा लाभ लेने वाला वर्ग और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता भाजपा को बहुत दिलाती है। यही वजह है कि कई जगह सरकार के खिलाफ नाराजगी होने के बाद भी भाजपा मुकामलों में कमजोर नहीं पड़ती। बंगाल की जीत भाजपा को सिर्फ एक और राज्य नहीं देगी, बल्कि पार्टी के भीतर वह विश्वास भी मजबूत करेगी कि अब वह देश के किसी भी हिस्से में सत्ता तक पहुँच सकती है। यही कारण है कि आने वाले समय में भाजपा और ज्यादा आक्रामक राजनीतिक विस्तार की रणनीति पर चल सकती है। दक्षिण भारत से लेकर पंजाब तक, पार्टी उन राज्यों पर ध्यान देगी जहाँ जहाँ उसकी पकड़ पूरी तरह मजबूत नहीं है। इसके साथ-साथ पंजाब की राजनीति पर भी नजर रहेगी। पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार है, लेकिन हाल के घटनाक्रम मोदी नहीं चर्चाएँ शुरू कर दी हैं। राज्यसभा सांसदों के भाजपा के करीब जाने की खबरों के बाद यह सवाल उठने लगा है कि क्या आने वाले समय में पंजाब सरकार पर दबाव बढ़ सकता है। हालाँकि केवल राज्यसभा सांसदों के जाने से सरकार नहीं गिरती, क्योंकि सरकार विधानसभा के बहुमत से चलती है। लेकिन राजनीति में संकेत हमेशा सीधे नहीं होते। कई बार छोटे घटनाक्रम आगे चलकर बड़े बदलाव की भूमिका बन जाते हैं। भाजपा यदि पंजाब में अपना संगठन बढ़ाने और विपक्षी दलों में सेंध लगाने की रणनीति पर चलती है, तो आने वाले समय में वहाँ की राजनीति और दिलचस्प हो सकती है।



हालाँकि राजनीति में कुछ भी स्थायी नहीं होता। जनता कब किसे ऊपर उठाए और किसे नीचे ले जाए, इसका अंदाजा बड़े-बड़े दल नहीं लगा पाते। लंबे समय तक सत्ता में रहने वाली हर पार्टी को एक समय बाद नाराजगी, थकान और स्थानीय असंतोष का सामना करना पड़ता है। भाजपा के सामने भी आगे यही चुनौती होगी।

'माँ तो बस माँ होती है'



शोभारानी तिवारी

बच्चा जब जन्म लेता है तो सबसे पहले माँ की गोद को ही अपनी दुनिया समझता है। माँ बच्चे को दूध पिला देती है और वह तुस हो जाता है। गोद में अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है। माँ का अर्थ है ममता का भाव। माँ शब्द सुनकर खुशी होती है। माँ तो अपने बच्चे को तब से प्यार करती है, जब बच्चा उसकी कोख में होता है। बच्चे की हर धड़कन में माँ का स्वास होता है। बच्चा माँ का स्पर्श पहचानता है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त अनुपम कृति उपहार है माँ। ईश्वर नहीं तो ईश्वर ने अपनी जगह माँ को ही भेज दिया। माँ ममता और वात्सल्य से परिपूर्ण होती है। माँ परिवार के नींव का पत्थर होती है, जिस पर परिवार रूपी महल मजबूती से खड़ा रहता है। माँ बच्चे को सभ्यता और संस्कृति की घुट्टी पिला-पिला कर बड़ा करती है। माँ में विनम्रता, दया, त्याग, करुणा, क्षमा इत्यादि गुण विद्यमान होते हैं। माँ अपने बच्चे को रोता हुआ देखकर व्याकुल हो जाती है और उसकी एक हँसी पर अपना दुःख दर्द सब भूल जाती है। माँ में सम्पूर्ण की भावना होती है और उनका मन फूलों से भी कोमल होता है। माँ अपने प्रेम की डोर से परिवार को बाँधकर रखती है।

परिवार में रिश्तों में मिठास लाने के लिए वह हर बार सूत्रधार बन जाती है। ईश्वर ने नारी को बनाया है क्योंकि नारी के बिना इस सृष्टि की रचना संभव नहीं है, वही इस संसार की धुरी है और बिना नारी के इस सृष्टि की कल्पना भी अस्मरणीय सी लगती है। माँ ही बच्चों की प्रथम गुरु हैं और परिवार ही बच्चे का प्रथम पाठशाला है। यहाँ पर बच्चा में प्रेम, त्याग, विनम्रता, शौर्य, आदि गुणों का विकास होता है। किसी ने सच ही कहा है कि केवल 'माँ' शब्द में पूरा ब्रह्मांड समाया हुआ है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी माँ के शब्द के आगे अपना शीर्ष झुकाते हैं। माँ के चरणों में जन्नत होती है और जो भी उनके रजकण को अपने माथे से लगाते हैं वह अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। माँ अपना हर वसंत अपने बच्चों पर न्यौछावर कर देती है और खुद अपने जीवन को पतझड़ से भर देती है। पहला निवाला बच्चे को खिलाती है, और सब को तुप्त करने के बाद कुछ खाती है।

वर्तमान समय में बच्चा बड़ा होकर अपनी दुनिया में मस्त हो जाता है और माता-पिता उसकी आँखों में किरकरी की तरह चुपने लगते हैं। जिस छाती का दूध पिलाकर माँ ने बड़ा किया, उसी की छाती में खंजर चुभता है। माँ ने लोरियाँ सुना-सुना कर जिसे सुलाया था वही उसे ताने सुनाता है। जिसे गिनती सिखाई थी, वही उनकी गलतियाँ गिनाता है। उंगली पकड़कर माँ ने चलना सिखाया था, वही बच्चा बड़ा होकर हाथ पकड़कर घर से बाहर निकाल देता है और वृद्धाश्रम में छोड़ देता है। मैं आज की पीढ़ी को एक नसहीत देना चाहती हूँ, कि माता-पिता को सताओगे तो खुद भी सुखी नहीं रह पाओगे. कहते हैं ना कि जैसे बॉबो गे वेसा ही काटोगे इसलिए वृद्ध माता-पिता को अपने मन मंदिर में रखना चाहिए क्योंकि माता-पिता के आशीर्वाद से बद्धकर्म और कुछ नहीं होता है. याद रहे कि माता पिता को आँखों में कभी आँसू ना आएँय माँ दुख और तकलीफ मिलने के बाद भी अपने बच्चों को कभी बर्दुआ नहीं देती है क्योंकि माँ तो बस माँ होती है।

माँ ने मेरा इंतजार किया ...



मंजुला मूड़ा

बात उन दिनों की है जब मैं बीमार चल रही थीं. वास्तव में तो वे अदम्य इच्छाशक्ति की पर्याय थीं. आत्मविश्वास और प्रबल इच्छा शक्ति के बल पर उन्होंने कैसर को तो मात दे दी, परन्तु बढ़ती उम्र और बीमारी की कमजोरी हावी हो रही थी. शहर में ही होने के कारण मैं संभवतः सप्ताह में एक दो बार उनसे मिलने चली जाती थी. उस दिन सुबह ही फोन पर बात हुई कि मैं की तबीयत ठीक नहीं है. इन्फाक से उस दिन हमने नई कार खरीदी थी तो पतिदेव ने कहा, 'शाम को गाड़ी लेकर मंदिर चलते हैं.' शाम तक आने का कहकर वह अपने ऑफिस चले गए.

दोपहर में लगभग तीन बजे मेरा मन बहुत विचलित होने लगा. मैंने बिटिया से कहा मैं तो माँ से मिलने जाती हूँ, तुम दोनों मंदिर चले जाना, गाड़ी लेकर. मैंनु बोली, 'अरे मम्मी अभी कुछ देर पहले तो बात हुई कि शाम को मंदिर चलेंगे फिर...' मैं घर से निकल चुकी थी मैं से मिलने को आतुर. घर में पहुँच कर दो कमरे पार कर के माँ के पास पहुँची. माँ को सलाइन लगी हुई थी. भैया भाभी बोले, 'आज तो सुबह से माँ आंखें ही नहीं खोल रही.' कुछ पल ही बीते ही मुझे वहाँ पहुँचे. मैं भैया भाभी के साथ पलंग के पास खड़ी थी मैं ने धीरे से आंखें खोली मुझे अपलक देखा और आंख से आँसू ढल गए. प्राण पखेरू उड़ गए. मैं हताप्रभ वहाँचकी- सी देखती रह गई. जैसे जैसे अपने आप को संभाला. माँ की इच्छानुसार उनका नेत्रदान भी कराया. अंततः यही लागा मानो, माँ ने मेरा इंतजार किया ...

माँ शब्द में पूरा ब्रह्माण्ड है। माँ न होती तो यह दुनिया न होती। माँ से ही तो सारी सृष्टि है। माता बालक को 9 महीने पेट में रखती है और अनेक परेशानियों का सामना उठाकर जब बच्चे को जन्म देती है तो उसे देखकर वह सारी प्रसव पीड़ा भूल जाती है और बच्चे के लालन-पालन में व्यस्त हो जाती है। बच्चा हंसता है तो माँ आनंदित होती है, बच्चा रोता है, उदास होता है तो वह भी उदास और दुखी हो जाती है। अपने बच्चे को स्तनपान कराकर वह आत्म सुख का अनुभव करती है। माँ ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। वह बच्चे को अच्छे संस्कार सिखाती है और पढ़ना-लिखना सिखाती है। बच्चे का बाल्यकाल माता की गोद में ही बीतता है। वह माँ की गोद में खाता है, पीता है, खेलता है और सोता है। इस प्रकार बच्चे के जीवन का निर्माण माँ के हाथों में है। इतिहास में आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे सब माताओं की देन ही हैं। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी के साथ उनकी चौर माता को भी याद किया जाता है। माँ का हृदय स्नेहमय होता है। वह अपने स्नेह के द्वारा बच्चे के जीवन में सरसता उत्पन्न करती है। संतति को योग्य बनाने के लिए माता का सुशिक्षित होना आवश्यक है। माँ अगर चतुर होती है तो सन्तान भी चतुर होती है। माँ के

